AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

उत्तर प्रदेश में नक्सलवादी आन्दोलन का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

ORIGINAL ARTICLE

Author
कु. अनेन्या
शोधार्थी
राजनीति विज्ञान विभाग
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ
वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत

शोध सार

इस शोध पत्र का उद्देश्य उत्तर प्रदेश में नक्सलवादी आन्दोलन का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है, साथ ही यह जानना है कि उत्तर प्रदेश का नक्सली आन्दोलन अन्य राज्यों से किस तरह भिन्न है और वर्तमान समय में इस आन्दोलन की क्या स्थिति है। उत्तराखण्ड, हरियाणा, आन्ध्रप्रदेश राज्यों के विपरीत उत्तर प्रदेश में नक्सलवादी आन्दोलन की प्रकृति अलग है यहाँ नक्सलवाद की उत्पत्ति एवं फैलाव माओवादी संगठनों से कम और प्रशासनिक भ्रष्टाचार उत्पीड़न के फलस्वरुप अधिक है। क्षेत्र में आन्दोलन का उद्‌भव का कारण अनुकूल भौगोलिक परिस्थितियाँ भी है क्योंकि यह क्षेत्र झारखण्ड, बिहार, मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ से सटे होने के कारण व आसानी से संक्रमण उबर–खाबर पहाड़ जंगल होने से आन्दोलन संचालित करने में एवं पुलिस से छिपने का सुरक्षित स्थान प्रदान करते हैं। पड़ोसी राज्य में नक्सली हिंसक गतिविधियों को अंजाम देने के बाद छिपने के लिए उत्तर प्रदेश में आते हैं। वन विभाग एवं भूमिहीन श्रमिकों के बीच जमीन पर जबरन कब्जा एवं गरीबों पर फर्जी मुकदमे लगाना, पुलिस द्वारा शोषण, फर्जी एनकाउंटर करना एवं जीवित व्यक्तियों की को मृत घोषित करना, स्थानीय आदिवासियों को अनुसूचित जनजाति का दर्जा न प्रदान किया जाना, सामंती शोषण, शिक्षा, चिकित्सा, गरीबी बेरोजगारी स्थानीय लोगों के मानवाधिकार का हनन, उद्योगों की स्थापना ना होना, भूमि सुधार कानून का सही प्रकार से लागू न होना इत्यादि से आन्दोलन को जन सहयोग प्राप्त होता है।

मुख्य शब्द

नक्सलवाद, उत्तर प्रदेश, आन्दोलन, माओवादी, आदिवासी, सामंत.

प्रस्तावना

उत्तर प्रदेश का दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि यह प्रारम्भ से ही नक्सल प्रभावित समीप वटी भौगोलिक क्षेत्र से घिरा हुआ है। उत्तर प्रदेश में नक्सलवादी आन्दोलन की शुरुआत लखीमपुर खीरी के उत्तर पूर्व के तराई क्षेत्र पलिया में जनवरी–फरवरी 1968 में किसानों ने जन पहलकदमी और जन सहभागिता के साथ ही प्रारम्भ हो गया था। गरीब किसानों और मजदूरों ने पीलीभीत तराई फॉर्म और पातियान, इब्राहिमपुर के फार्मों पर पूँजीपतियों, भूस्वामियों और फार्म मालिकों के लठेतो से मोर्चा लेकर जमीन पर कब्जा कर लिया, लेकिन एक वर्ष में ही यह आन्दोलन बिखर गया। शुरुआत में नक्सली गतिविधियाँ उत्तर प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्रों में थी जो अब उत्तराखण्ड का

हिस्सा है। धीरे–धीरे बिहार, झारखण्ड, छत्तीसगढ़ व मध्य प्रदेश से नक्सली अपराध करके उत्तर प्रदेश में शरण लेने हेतु आने लगे। 1990 के दशक में नक्सली उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिला चन्दौली, मिर्जापुर, सोनभद्र में सक्रिय हो गये। उत्तर प्रदेश पुलिस 1997 के वर्ष को नक्सली गतिविधियों के प्रारम्भ का समय मानती है। इसी वर्ष सोनभद्र के मांची थाना क्षेत्र के रामपुर गाँव के रामशंकर जायसवाल की नक्सलियों द्वारा हत्या कर दी गयी और चन्दौली में कांग्रेस नेता हेमनाथ चौबे को नक्सलियों ने गोली मारकर हत्या कर दी। पलपल, निवारी, पलहरी, कोदई, गढ़वाल आदि इलाकों में तेंदूपत्ता के फलों में नक्सलियों द्वारा आग लगा दी गयी। इसके बाद उत्तर प्रदेश में नक्सलियों ने कई घटनाओं को अंजाम दिया। 2000–01 में पन्नूगंज थाना क्षेत्र में माओवादियों से मुठभेड़ हुई इस बीच एसओजी टीम में शामिल रहे गोरख यादव के पिता की हत्या कर दी गयी। 2001 में मिर्जापुर में माओवादियों ने पीएसी कैम्प से बड़े पैमाने पर हथियारों की लूट को अंजाम दिया। 2000 पीएसी कैम्प से असलहो की बड़ी लूट हुई। सोनभद्र की सबसे बड़ी घटना 26 फरवरी 2003 को हुई जब विजयगढ़ के युवराज शरह व उनके दो कर्मचारियों की हत्या कर दी गयी। चन्दौली के नौगढ़ पुलिस थाने के हिनौती घाट में 20 नवम्बर 2004 में बड़ी वारदात हुई, जिसमें माओवादियों ने विस्फोट कराकर पुलिस का वाहन उड़ा दिया और पीएसी के 18 जवान शहीद हो गये। बलिया में नवम्बर 2012 में एक महिला को दर्जन लोगों ने घर में घुसकर हत्या कर दी थी जहाँ से लाल पर्चे भी बरामद हुआ। वर्ष 2002 के विधानसभा चुनाव में भी नक्सलियों ने पोलिंग पार्टियों पर हमला किया, लेकिन इसमें कोई हताहत नहीं हुआ। सदर कोतवाली के साहस पाली में वर्ष 2008 में गांव के सोहन सिंह की गोली मारकर हत्या कर दी गयी थी। पुलिस जांच में नक्सली गतिविधि का सुराग मिलने पर प्रशासन में हड़कम्प मच गया था। 2012 में सहतवार थाना क्षेत्र के कुशहर गांव में पुलिस वर्दी में आये नक्सलियों द्वारा कुशहर गाँव की प्रधान फूलमती देवी की हत्या कर दी गयी थी।

उत्तर प्रदेश में शिव कुमार को नक्सलवाद का अगुआ माना जाता है क्योंकि यहाँ से एकमात्र नक्सलवादियों की केन्द्रीय समिति के सदस्य थे, किन्तु चारु मजूमदार से मतभेद होने के बाद उन्हें दल से निकाल दिया गया था। कहने को तो उत्तर प्रदेश में पिछले 20 सालों में कोई बड़ी घटना नहीं हुई है लेकिन प्रदेश की तीन जिलों में अभी भी नक्सली छाया मौजूद है। यह तीनों जिले चन्दौली, मिर्जापुर, सोनभद्र लाल गलियारा के अन्तर्गत आते हैं, चन्दौली में 7 पुलिस थानों के लगभग 241 गाँव में नक्सलियों की काली छाया है, मिर्जापुर में 6 थानों के लगभग डेढ़ सौ गाँव नक्सलवाद से प्रभावित है, वहीं सोनभद्र में तो 17 पुलिस थानों के लगभग 300 गाँव नक्सलियों के काली छाया के चपेट में है, हालांकि पहले के अपेक्षा नक्सलवादी घटनाओं में भारी कमी देखने को मिली है लेकिन बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़ से उत्तर प्रदेश के सटे होने के कारण इस पर हमेशा नक्सली खतरा बना रहता है। उत्तर प्रदेश में एक ऐसा भी समय था जब इलाके के कई गाँव में आये दिन नक्सलियों की आहट सुनाई देती थी। भय और आतंक की वजह से कई परिवार अपना घर छोड़ दूसरे शहरों में पलायन कर गये।

2013 में खुफिया एजेंसी से जुड़े अधिकारियों का कहना था कि प्रदेश के 23 जिले नक्सलवाद से प्रभावित हो चुके हैं इनमें कानपुर, सिद्धार्थ नगर, गाजियाबाद, नोएडा, मेरठ, कुशीनगर, श्रावस्ती, गोंडा, पीलीभीत के अलावा फतेहपुर, प्रयागराज, प्रतापगढ़ में नक्सली गुट सक्रिय है। 2017 के चुनाव में पुलिस ने उत्तर प्रदेश में 100 नक्सलियों की एक सूची तैयार की थी, इनमें से 35 नक्सली अभी जमानत पर हैं। 2023–24 में बलिया से माओवादियों की गिरफ्तारी इस बात का प्रमाण है कि यह देश विरोधी संगठन पूरे प्रदेश में अपनी जड़े जमा रहे हैं। अब प्रयागराज, देवरिया, चन्दौली, आजमगढ़, वाराणसी में यह संगठन सक्रिय हो रहे हैं। उत्तर प्रदेश में नक्सलवाद फिर से अपनी जड़े अर्बन नक्सलिज्म के माध्यम से मजबूत करने के फिराक में है। इसका खुलासा तब हुआ जब नेशनल इन्वेस्टिगेशन एजेंसी ने अभी हाल ही में सितम्बर 2024 में माओवादी गतिविधियों को बढ़ावा देने की कोशिश में जुटे नक्सलियों के मददगारों के आठ ठिकानों पर छापेमारी की। NIA ने अलग–अलग ठिकानों से कुछ अहम् दस्तावेज भी बरामद किये हैं। राष्ट्रीय जांच एजेंसी यानी एनआईए माओवादी मामले के सिलसिले में उत्तर प्रदेश के प्रयागराज, वाराणसी, चन्दौली, आजमगढ़, देवरिया जिलों में 8 ठिकानों से मोबाइल फोन, सिमकार्ड, लैपटॉप, पेन ड्राइव, कम्पैक्ट डिस्क, नक्सली साहित्य किताबें व परिचय पॉकेट डायरी और अन्य आपत्तिजनक दस्तावेजों सहित डिजिटल उपकरण जब्त किये गये हैं। दरअसल उत्तर प्रदेश में पिछले कई सालों में नक्सलवाद की कोई खबरें न आने से

माना जा रहा था कि यूपी में नक्सलिज्म अब अपनी जगह खो चुके हैं लेकिन बीते साल यूपी एटीएस की रेट में बलिया से एक महिला समेत पाँच नक्सलियों को गिरफ्तार किया तो जांच एजेंसियां चौकन्नी हो गयी। यह सभी नक्सली बलिया के ही रहने वाले हैं। स्पेशल डीजे प्रशान्त कुमार ने बताया कि संगठन की केन्द्रीय कमेटी के प्रमुख नेता संदीप यादव उर्फ रूपेश उर्फ बड़का भैया की मौत हो जाने के बाद प्रमोद मिश्रा उर्फ बुधौ उर्फ बिहारी जी ने पूर्वांचल में एक–एक डॉग कमेटी बना कर संगठन के सचिव सन्तोष वर्मा उर्फ मन्तोष के माध्यम से लगातार महिलाओं एवं पुरुषों की भर्ती प्रदेश में की जा रही थी इसके लिए कुछ लोगो को जंगल में भेज कर नक्सली प्रशिक्षण भी दिया जा रहा था। अधिकारियों के अनुसार पूर्व में हुई नक्सली घटनाओं में शामिल नक्सलियों से 1खूंखार माने जा रहे हैं। अभी कई सदस्य अंडरग्राउंड रहकर अपनी गतिविधियों में लगे हैं। सुरक्षा के दृष्टिगत उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर में पीएसी की एक कम्पनी तैनात है जबकि सोनभद्र में पाँच कम्पनियाँ एक प्लाटून पीएसी एवं दो कम्पनी सीआरपीएफ की तैनात है, चन्दौली में दो कम्पनी पीएसी एवं एक कम्पनी सीआरपीएफ की तैनात है, इसके साथ ही मिर्जापुर ,सोनभद्र और चन्दौली में नक्सलियों से सम्बन्धित कई मामले न्यायालय में विचाराधीन है, जिसकी वजह से 38 अभियुक्त जेल में निरुद्ध हैं।

साहित्य सर्वेक्षण

रेनू मीना एवं राजेश सिंह (2010) ने अपनी पुस्तक 'नक्सलवादः राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा' में लिखा है कि जिस उद्देश्य को लेकर नक्सलवाद का जन्म हुआ था वह कहीं पीछे छूट गया है और आज वह अपने मूल मकसद से भटक चुका है। इनके द्वारा की जाने वाली हिंसा आमजन को अपने प्रभाव में ला रहा है। इस आंदोलन का खामियाजा खुद उनके लोगों को ही भुगतना पड़ रहा है।

अनिल पी. जैन (2011) ने अपने अध्ययन 'नक्सलवाद उद्देश्य विकास और विस्तार' में व्यक्त किया है कि राजसत्ता में अधिकांश प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से विदेशी पूँजीपति, जमींदार व सरकारी पदों पर कार्य करने वाले लोग थे, यह लोग बहुसंख्यक मजदूर, श्रमिकों का शोषण करते थे इस व्यवस्था को नष्ट करने के लिए हथियार उठाना चाहिए और सत्ता प्राप्त करना चाहिए। यह माओ की विचारधारा नक्सलवादियों में निर्मित हुई जिसने बड़ी मात्रा में हिंसाचार को जन्म दिया।

नरेन्द्र कुमार शर्मा (2012) ने अपने अध्ययन 'भारत में नक्सलवाद' में व्यक्त किया है कि नक्सलवाद की नींव 1948 में ही पड़ गयी थी जब दक्षिणी भारत के लगभग 2500 ग्रामीणों ने तेलंगाना नामक अलग राज्य की मांग को लेकर आन्दोलन प्रारम्भ किया था। 1964 में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का एक हिस्सा अलग हो गया और इसे मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के नाम से जाना जाने लगा। धीरे–धीरे इसमें कई पार्टियों का उदय हुआ और 2004 में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी माओवादी की स्थापना हुई तब से यह आन्दोलन अधिक हिंसक हो गया है।

राम रक्षा दास (2017) ने अपनी पुस्तक ' नक्सल आन्दोलन (एक हकीकत)' में लिखा है कि नक्सल आन्दोलन की शुरुआत जल, जमीन, जंगल पर खोई अधिकार को फिर से प्राप्त करने के लिए हुआ था। इसमें न्यूनतम मजदूरी की समस्या भी जुड़ी हुई थी। इस बात को सरकार और सामंत को छोड़कर सभी लोग स्वीकार करते हैं, लेकिन इस आन्दोलन के पीछे एक और कारण था वह उनके औरतों का जबरन यौन शोषण और बलात्कार करना। इस पुस्तक में लेखक ने नक्सल आन्दोलन के पृष्ठभूमि के अध्ययन के साथ ही नक्सलवाद का बहुत मार्मिक वर्णन किया है।

डॉ. गौरी सिंह परते (2021) ने अपनी पुस्तक भारतीय राजनीति में नक्सलवाद का बढ़ता हुआ प्रभाव में नक्सलवाद की वैचारिक आधार माओ का सामान्य वर्णन किया है उन्होंने कहा है कि आज माओ जीवित नहीं है परन्तु उसके विचार नक्सलवाद के रूप में जीवित है। आज माओ के विचार नक्सलवाद की हिन्दुस्तानी चादर ओढ़ कर यहाँ आ रहे हैं तभी तो यह हल्की हवा ही है पर यदि इसका समाधान जल्द ही नहीं किया गया, तो इसे आँधी का रूप धारण करते देर नहीं लगेगी।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोध पत्र में अध्ययन हेतु उत्तर प्रदेश राज्य का चयन किया गया है, जिसका अक्षांशीय विस्तार 23°52′ उत्तरी अक्षांश से 30°24′ उत्तरी अक्षांश तक है, और देशांतरीय विस्तार 77°05′ पूर्वी देशांतर से 84°38′ पूर्वी देशांतर तक है। उत्तर प्रदेश भौगोलिक विस्तार की दृष्टि से भारत का चौथा सबसे बड़ा राज्य जिसका क्षेत्रफल 240 हजार वर्ग कि.मी. है जो कि भारत के कुल क्षेत्रफल का 7.33 प्रतिशत है। उत्तर प्रदेश एक ऐसा राज्य है जो भारत के उत्तर मध्य में स्थित है। StatisticsTimes.com के अनुसार उत्तर प्रदेश की जनसंख्या 241,265,000 (24.13 करोड़) तक पहुँचने का अनुमान है। यह भारत का सबसे अधिक आबादी वाला राज्य है। उत्तर प्रदेश में, 2023 की वन स्थिति रिपोर्ट के अनुसार, कुल वन क्षेत्र 15,045.80 वर्ग किलोमीटर है, जो राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 6.24 प्रतिशत है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीय स्रोतों पर आधारित है। उत्तर प्रदेश में नक्सलवाद की समस्या के सम्बन्ध में विभिन्न पुस्तकों, समाचार पत्रों, शोध पत्रों, पत्रिकाओं के द्वारा जानकारी संकलित की गयी है। शोध विधि किसी भी शोध कार्य की सफलता के लिए आवश्यक है। यह सुनिश्चित करती है कि शोध व्यवस्थित, वैध, विश्वसनीय और प्रभावी हो, जिससे ज्ञान के विकास और सामाजिक प्रगति में योगदान हो सके। इस शोध पत्र में ऐतिहासिक और विश्लेषणात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध का उद्देश्य

1. उत्तर प्रदेश के नक्सलवाद अध्ययन करना।
2. इस समस्या की जड़ो, कारणों और प्रभाव को समझना।
3. इस समस्या को रोकने के लिए प्रभावी समाधान ढूंढना।
4. सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक कारणों का अध्ययन करना जो लोगों को नक्सलवाद की ओर आकर्षित करता है।

नक्सलवाद के उन्मूलन हेतु उपाय

नक्सलवाद एक ऐसी समस्या है जो जमीनी समस्याओं से जुड़ी हुई है। गरीबी, भुखमरी, शोषण, बेरोजगारी, अत्याचार और अन्याय को नक्सली अपना प्रमुख मुद्दा बनाते हैं, जिससे कोई भी आम नागरिक आसानी से इनके बहकावे में आ जाता है। इन जमीनी समस्याओं का अन्त किये बिना नक्सलवाद को समाप्त नहीं किया जा सकता है, इसलिए सरकार को केवल सुरक्षात्मक नहीं बल्कि विकासात्मक पहलूओ पर निचले स्तर पर कार्य करना होगा। नक्सलवाद के उन्मूलन हेतु उपायः

1. नक्सलवाद का आधारशिला हैं युवा, और यदि नई पीढ़ी के युवाओं को नक्सलवाद के तरफ जाने से रोक लिया जाये तो नक्सलवाद की कमर टूट जायेंगी। यह तभी हो सकता है जब नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में बच्चों के शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाये, साथ ही शिक्षा रोजगारपरक हो ताकि शिक्षा प्राप्त करने के बाद युवा पीढ़ी को नौकरी के लिए भटकना न पड़े।
2. बच्चों के सर्वोत्तम हित को सुनिश्चित करने के लिए देखभाल संस्थागत और गैर संस्थागत व्यवस्था सहित सेवा प्रदायगी का एक सुरक्षा जाल बनाये जाये, जिसमें बच्चों का सर्वोत्तम विकास किया जा सके।
3. कानून का उल्लंघन करने वाले बच्चों और देखभाल एवं सुरक्षा के दर्द वाले बच्चों सहित तनाव के व्यवस्था रहने वाले बच्चों के लिए उचित कानूनी प्रावधानों की व्यवस्था की जानी चाहिए।
4. इन क्षेत्रों में लघु एवं कुटीर उद्योग को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
5. उन क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के परम्परागत व्यापार को संरक्षित किया जाना चाहिए।
6. विशेष रूप से रिश्वत की व्यवस्था का जब तक अन्त नहीं होगा नक्सलवाद को समाप्त नहीं किया जा सकता, सरकार को परम्परागत रिश्वत की व्यवस्था के चलन को रोकने पर ध्यान देना चाहिए।

निष्कर्ष

उत्तर प्रदेश में नक्सलवादी आन्दोलन एक जटिल समस्या है, जिसके कई सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक कारण है। राज्य सरकार को इस समस्या से निपटने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है, जिसमें सुरक्षा, विकास, और सामाजिक न्याय के मुद्दों को सम्बोधित करना हो। उत्तर प्रदेश में नक्सलवादी आन्दोलन का प्रभाव पहले की अपेक्षा कम हुआ है, लेकिन यह पूरी तरह से खत्म नहीं हुआ है। 2004 के बाद उत्तर प्रदेश में कोई बड़ी वारदात या घटना नहीं हुई और नक्सल प्रभावित जिलों की संख्या भी घटी है, लेकिन बिहार और मध्य प्रदेश से लगे हुए उत्तर प्रदेश के सीमा के कुछ क्षेत्र अभी भी संवेदनशील बने हुए हैं। यह अभी भी एक चुनौती बनी हुई है। उत्तर प्रदेश में जनपद पुलिस और पीएसी व सीआरपीएफ कम्पनियों द्वारा नक्सल प्रभावित एवं सीमावर्ती क्षेत्रों में कांबिंग, सर्चिंग एवं पेट्रोलिंग आदि की कार्यवाही की जाती है लेकिन जब तक मूल समस्याओं का अन्त नहीं होगा तब तक नक्सलवाद को जड़ से समाप्त नहीं किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची

1. बॉश, दीपायन (2008) नक्सलबाड़ी और उतरवर्ती चार दशकः एक सिंहावलोकन, *दायित्व बोध त्रैमासिक पत्रिका,* गोरखपुर, जनवरी–मार्च 2008, वॉल्यूम 3, इश्यू 1, पृ. 45–55।
2. 'बलिया से पाँच खूंखार नक्सली गिरफ्तार, 15 वर्ष बाद नक्सली गतिविधि से प्रशासनिक महकमे में हलचल' *अमर उजाला समाचार पत्र,* इंटरनेट संस्करण, 16 अगस्त 2023, Accessed on 05/03/2025.
3. 'बनारस, प्रयागराज समेत यूपी के आठ स्थानों पर एनआईए का छापा, अर्बन नक्सल मामले में हुई कार्रवाई' *नवभारत टाइम्स समाचार पत्र,* इंटरनेट संस्करण, 5 सितम्बर 2023, Accessed on 06/03/2025.
4. शर्मा, नरेन्द्र कुमार (2012) *भारत में नक्सलवाद,* महेन्द्र बुक कम्पनी, गुरुग्राम।
5. दास, राम रक्षा (2017) *नक्सल आन्दोलन (एक हकीकत),* जानकी प्रकाशन, पटना।
6. परते, गौरी सिंह (2021) *भारतीय राजनीति में नक्सलवाद का बढ़ता हुआ प्रभाव,* ओमेगा पब्लिकेशन, दिल्ली।
7. कुमार, शैलेन्द्र एवं पटेल, शुभम (सितम्बर 2022) उत्तर प्रदेश में बदलते भूमि उपयोग प्रतिरूप का कृषि पर प्रभावः एक भौगोलिक अध्ययन, *इंटरनेशनल जनरल ऑफ़ नॉवेल रिसर्च एंड डेवलपमेंट,* ISSN 2456-4184, Vol-5, Issue 9.
8. अग्निहोत्री, विवेक (2021) *अर्बन नक्सल बुद्धा इन ए ट्रैफिक जाम,* गरुड़ प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, गुरुग्राम।
9. सिंह, अमर बहादुर (2017) *नक्सल समस्या और भारत,* मनीष प्रकाशन, वाराणसी।
10. माओवादी विद्रोहः समय रेखा (आतंकवादी गतिविधियां), साउथ एशिया टेररिज्म पोर्टल, www.satp.org, Accessed on 16/02/2025.

——==00==——